International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 1; Issue 7; September 2016; Page No. 46-47

चन्द्रकान्ता कथा साहित्य में चन्द्रकान्ता स्त्री की बदलती–भूमिका

रेनुका कुमारी

पी-एच0डी0, हिन्दी विभाग, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद परिचमीकरण, लौकिकीकरण तथा जातीय गतिशीलता ने स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति को उन्नत किया है शिक्षित होने के साथ ही आज स्त्री आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनने लगी है। शिक्षा के व्यापक प्रसार, नयी वस्तुओं का आकर्षण, उच्च जीवन बिताने की बलवती इच्छा और बढ़ती महँगाई ने इन्हें विभिन्न क्षेत्रों में काम करने की प्रेरणा प्रदान की है। आज नारी के बहुआयामी जीवन में प्रतिस्पर्धा की भावना आ चुकी है। इसलिए वह निरन्तर अपने ऊँचे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील है। वर्तमान परिवेश में नारी पर सामाजिक दबाव व नियंत्रण अपेक्षाकृत कम है। आज की शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्रियाँ अपने पारिवारिक जीवन में अनेक महत्पवूर्ण निर्णय स्वयं लेती है यानि आज की स्त्री की भूमिका परिवार और समाज में काफी बदल चुकी है।

इक्कीसवीं सदी की प्रगतिशील नारी स्वयं को एक नये मोड़ पर खड़ा हुआ पाती है। आज स्त्री की सत्ता प्राप्त करने तथा जीवन में अर्थ की महत्ता का एहसास हो गया है। आधुनिक शिक्षित सशक्त नारी के ज्ञान चक्षु खुल गये हैं। अब वह अपनी शक्ति और अधिकारों की प्राप्ति के लिए बुद्धि चातुर्य से पुरूष समाज की मानसिकता को बदलने में सक्षम है। आर्थिक आत्मनिर्भरता ने आज स्त्री को जीवन के हर मोड़ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। महानगरों में सड़कों पर दौड़ते भीड़ के रेलों में औरत की संख्या पुरूषों की अपेक्षा अधिक दिखाई देती है। घर और परिवार की जिम्मेदारी को निभाती स्त्री आज कामकाजी महिला के रूप में पहचान बनाने में प्रयासरत है।

सारांश

चन्द्रकान्ता में अपने कथा साहित्य में आज की स्त्री की बदलती भूमिका की छवि का अंकन किया है। उनकी स्त्री पात्र आज के नारी जीवन में हो रहे बदलावों को ग्रहण करती दिखाई देती हैं। पहले की स्त्री की तुलना में पति के साथ समानता करती है वे बुजुर्गों के पैर छूने और न दबाने से इंकार करती है वे पति को एक मित्र की तरह देखती है। 'अन्तिम साक्ष्य' उपन्यास की कैलाश इसी प्रकार की नारी पात्र है ''सच भई, पूछ लो इसी से। औसत पत्नियों जैसी होती, तो सुबह उठते मेरे पैर न छुआ करती? रात थका–मांदा लौटता था, तो जरा पांव न दाबती मेरे? हैं, जैसा सभी करती हैं?''

''अहा सभी करती हैं। पता नहीं किस परनानी के जमाने में रहते हे जनाब! पैर दाबेंगी पत्नियाँ? और कोई धन्धा नहीं है उन्हें? बहुत पुरानी बात कर रहे हो।''

चन्द्रकान्ता ने 'अन्तिम साक्ष्य' में स्त्री का उल्लेख किया है जो उसके (बीजी के) पति से प्रेम करती है, परन्तु जब बीजी को पता पड़ता है तो वे अन्दर से टूट जाती हैं और किसी से कोई शिकायत नहीं करती हैं। स्वयं परिवार की जिम्मेदारी को यथावत् निभाते है स्त्री मीनू उनके व्यवहार को देखकर उनके पति से कहती – ''मीना मौसी एक रट लगा रही, ''तुम दीदी के पास जाओ लौट जाओ, मुझे जहन्नतुम में जाने दो। मुझसे उनका घुलना सहा नहीं जाता।''

यानि आज की स्त्री स्वार्थी नहीं है वह किसी के परिवार को विघटित होते नहीं देखना चाहती है। जो इस उपन्यास में मीनू मौसी के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। यहाँ बीजी भी अपने पति से किसी भी प्रकार झुकती नहीं है। वह उनसे बोलना भी बन्द कर देती है।

'अर्थांतर' उपन्यास की कम्मो भी अपने पति के बदलते व्यवहार को देखकर अपनी जीवन–चर्या में बदलाव करती है। वह दोस्तों, सहेलियों के साथ पार्टियों, रेस्टोरेन्ट, पिकनिक जाती है, क्योंकि उसका पति सदा व्यापार में ही लगा रहता है, परन्तु कम्मो पति से सहवास चाहती है। इसकी बदलती छवि को देखकर मिसेज भाटिया कहती हैं ''अरे मिसेज विजय, मैंने तो पहली नजर में पहचाना ही नहीं। कितनी बदल गई हो।''

''बहुत दिनों बाद मिले है न।'' 'बदलना' अधिक सुखकर नहीं लगा। ''नहीं भई, बहुत बदल गई। कहाँ पर लम्बी चोटी और सीधी–साधी वेश–भूषा। कहाँ ये तामझाम।''

'अपने–अपने कोणार्क' में चन्द्रकान्ता ने एक ऐसी शिक्षित लड़की की संवेदना व्यक्त की है जो अपनी उम्र का ध्यान न रखकर अपने भाई–बहनों के सुख–दुख, माता पिता का सहयोग करती है। वह पी–एच.डी. करके डिग्री कालेज में प्रवक्ता है वह अपनी उम्र बढ़ जाने के कारण शादी के लिए चिन्तित दिखाई नहीं देती। बल्कि अपने परिवार के मुखिया का पद संभालती हुई अपने छोटे भाई बहनों की शादी कराती है और परिवार का विघटित होने से बचाती है। स्वयं घर से बाहर रहकर जीवनयापन घर से बाहर रहकर जीवनयापन करती है। इस उपन्यास की कुनी ऐसी ही पात्र है। वह स्वयं कहती है ''बचपन से ही घर के छोटे–छोटे दायित्व निभाती रही हूँ भाई–बहनों को खिलाती–पालती घर के छोटे–बड़े कामों में हाथ बँटाती मैं बड़ी हो गई तो एक दिन 'महसूस किया कि धुरी बन गई हूँ। जरा सा भी अपने मन–मुताबिक इधर–उधर हिली डुली तो पूरी घर का सन्तुलन ही बिगड़ जायेगा। मैंने आजन्म कुवारेपन को स्वीकृति दी। और अपने आपको घर से ज्यादा जुड़ा पाया। वही जैसे मेरी आखिरी मंजिल हो गया। कोई कभी शादी की बात करता, तो मैं गुस्से में भर उठती। शादी का सौदा? तन के व्यापार के लिए सामाजिक डप्पा! नहीं मुझे यह सौदा मजूर नही था। बस! मुझे मेरा घर ही भला।'' यानि आज की स्त्री विवाह करना ज्यादा जरूरी नहीं समझती वह केवल अपने व्यक्ति के लिए घर की सभी जिम्मेदारी निभारती है।

उपसंहार

आज की पढ़ी–लिखी स्त्री समझौता करने में समर्थ है। जब किसी को उसकी जरूरत होती है तो वह पीछे नहीं हटती है इस उपन्यास की कुनी भी विवाहित अनिरूद्ध से विवाह करने को तैयार हो जाती है। चूँकि उसे अनिरूद्ध के बच्चों पर दया आ जाती है उसकी पत्नी मर चुकी है वह कहती है – ''यदि मैं अनिरूद्ध से शादी करूँ तो शायद वैसा प्यार न दे पाऊँ जो मैंने, सिद्धार्थ को दिया था, पर उसकी साथिन और बच्चों की माँ बनकर एक उदास घर में खुशियों का उजास तो भर सकती हूँ।

आज की शिक्षित नारी की विवाह के प्रति जातीय विचार धारा बदल गई है। वह अपनी इच्छा से अन्य जाति के लड़कों से विवाह करती है माता–पिता के विरोध करने पर उनके खिलाफ हो जाती है। 'कथा सतीसर' उपन्यास की विजया भी लड़के से कोर्ट मैरिज कर लेती है। ''मैंने अफजल से कोर्ट मैरिज की है। आप मेरे माँ–बाप हो, आर्शीवाद चाहती हूँ। अगर यह शादी आपको स्वीकार नही तो मेरा श्राद्ध कर देना। जो आप ठीक समझो, अफजल के बिना मेरा जीना मुश्किल नही। अब तो खैर, पीछे मुड़ने की बात नहीं है।''

आज की स्त्री पहले की अपेक्षा पढ़ाई पर विशेष ध्यान दे रही है। और पढ़ी–लिखी महिलायें अन्य महिलाओं को पढ़ाने के लिए पूर्ण सहयोग कर रही है। आज की शिक्षित नारी पति से सामंजस्य न बैठने के कारण अपने माँ–बाप के यहाँ रहकर आगे की पढ़ाई कर नौकरी करती हैं। जिससे वह अपने पैरों पर खड़ी होकर अपने बच्चों का लालन–पालन कर सके। इस उपन्यास की 'राज्ञा' भी इसी प्रकार की पात्र है। वह विवाह के बाद हिन्दी से एम0ए0 कर डॉक्ट्रेट करती है तथा ताता के सहयोग से नौकरी प्राप्त करती है। जब सास–ससुर उसको प्रताड़ित करते हैं तो वह ससुराल छोड़कर भाग आती है। और स्वयं नौकरी कर देविका के साथ जीवनयापन करती है। ''मैंने अटैची मैं कुछ कपड़े डाल दिए और देविका का हाथ पकड़े घर से बाहर निकल आई। उस वक्त देविका हिलक–हिलक कर रो रही थी। मेरी ऑखें खुशक थीं। मैंने घर छोड़ दिया।''

यानि आज की पढ़ी–लिखी नारी सास–श्वसुर या पति के अत्याचार सहन नहीं करती, बल्कि ससुराल छोड़कर अपने पति के घर स्वयं नौकरी करके अपने बच्चों का पेट पालती है इस उपन्यास की कात्या भी वैवाहिक कार्तिकेय से विवाह करती है। चूँकि उसके बच्चे बिना माँ के दुःखी रहते है। उन बच्चों के प्रति सहानुभूति होने के कारण उससे विवाह कर लेती है। यानि आज की नारी पारिवारिक समझौता करने में अपना भला समझती है वह दूसरों के लिए जीती है। और अपने पागल देवर का ध्यान रखती है। जिसे उस के जेठ–जिठानी ने अपने पास नहीं रखा था।

अतः आज की स्त्री अपने ससुराल और अपने माता–पिता के परिवार को पूर्ण जिम्मेदारी से संचालित करती दिखाई देती है जैसा कि चन्द्रकान्ता जी के उपन्यासों के स्त्री पात्रों में उक्त वृत्तियां दृष्टिगत होती है।

निष्कर्ष

समग्र विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि साठोत्तरी युगीन स्त्री विमर्श से जुड़ी सशक्त लेखिका है इनके उपन्यासों में स्त्री विमर्श का स्वरूप व्यापक फलक पर दृष्टिगत होता है इनके उपन्यासों में स्त्री के आधुनिक रूप का अंकन है चन्द्रकान्ता कथा साहित्य में स्त्री की बदलती भूमिका की रक्षा हेतु कृत संकल्पित हैं।

सन्दर्भ

1. अपने अपने कोणार्क, चन्द्रकान्ता, पृ0 19।
2. अपने–अपने कोणार्क, चन्द्रकान्ता, पृ0 91।
3. अपने–अपने कोणार्क, चन्द्रकान्ता, पृ0 197।
4. अन्तिम साक्ष्य, चन्द्रकान्ता, पृ0 76।
5. अन्तिम साक्ष्य एवं अर्थांतर, चन्द्रकान्ता, समय प्रकाश अंसारी रोड़ दरियागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण –2007।
6. अपने–अपने कोणार्क, चन्द्रकान्ता, राजकमल प्रकाशन प्रा लि0, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1995।
7. आदमी की निंगाह में औरत, राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण – 2001।
8. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का चित्रण चिन्तन प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण –2001।
9. खुली खिड़कियाँ, मैत्रेयी पुष्पा, विजन वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्मरण –1989।
10. पत्थर के युग में दो बुत चतुरसेन शास्त्री।
11. नारी चेतना और कृष्णा सोबती के उपन्यास, गीता सोलंकी भारत पुस्तक भण्डार, दिल्ली, प्रथम संस्करण – 2004।
12. नारी दश, दलन और दायित्व, डा0 अहिल्या मिश्र, गीता प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1968।
13. मैं और मृदुला गर्ग राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण –1984।
14. स्त्री–देह की राजनीति से देश की राजनीति, मृणाल पाण्डे।
15. स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, डा0 जगदीश्वर चतुर्वेदी।
16. मेरे संधिपत्र, सूर्यबाला, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1977।
17. मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना, स्मिता तिवारी, के0के0 पब्लिशिंग, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006।
18. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, अमर ज्योति अन्नापूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्रथम संस्करण 1999।
19. वर्तमान हिन्दी महिला कथा लेखन और दाम्पत्य जीवन वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1995।